राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • मंगलवार • 12 अप्रैल • 2022

दवाओं के प्रयोग से लहसुन पर 300 दिनों तक नहीं पड़ेगा प्रतिकूल असर

कानपुर (एसएनवी)। इस समय खेतों में लहसुन खुदाई का समय होने के कारण सीएसए कृषि विवि ने लहसुन की खेती करने वाले किसानों के लिए सलाह जारी किया है। लहसुन की गुणवत्ता व भंडारण क्षमता बढ़ाने के लिए किसानों को लहसुन खुदाई से 20-25 दिन पहले 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोक्साइड दवा का छिड़काव करने की सलाह दी है। यह लगभग 300 दिनों तक लहसुन को प्रतिकूल असर से बचायेगा। खुदाई से 15 दिन पहले सिंचाई बंद कर देने से भी गुणवत्ता बेहतर होती है।

लहसुन किसानों के लिए सीएसए की सलाह

विवि के शाकभाजी अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ.आईएन शुक्ला के मुताबिक लहसुन की बुवाई अक्टूबर में की जाती है। अप्रैल के महीने में जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे एवं कंद के रंगों में चमक आ जाये, तब इसे खुदाई योग्य समझना चाहिए। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे लहसुन की खुदाई अपरिपक्व अवस्था में कदापि न करें। अन्यथा लहसुन के कंद की गुणवत्ता प्रभावित होने के साथ ही भंडारण क्षमता कम हो जाती है। इससे किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। खुदाई के उपरांत लहसुन के डंठल को कंद से 2-3 सेंटीमीटर गर्दन छोड़कर कटाई करनी चाहिए। इसके बाद कंद से मिट्टी को अच्छी तरह से साफ करके छायादार स्थान में 4-5 दिन रखना चाहिए। इसके बाद कटे-फटे कंद को अलग कर देना चाहिए। समान रंग आकार के कंदों को हवादार कमरे में हवादार प्लास्टिक के कैरेट्स में लटका कर रखना चाहिए। इन तरीकों से लहसुन की भंडारण क्षमता बढ़ जाती है।

औषधीय गुणों से भरपूर है लहसुन : साकभाजी अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी डॉ.पीके सिंह ने बताया कि सब्जी व मसाले के रूप में उपयोग किये जाने वाले लहसुन में औषधीय गुण होते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फास्फोरस के साथ विटीमिंस भी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। लहसुन का तीखापन डाईएलील डाईसल्फाइड के कारण होता है। उन्होंने बताया कि औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन का प्रयोग आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति में औषधि के विभिन्न रूपों में किया जाता है। यह वातहर तथा भोजन के पाचन में गैसहर के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। लहसुन में कीटनाशक, कवक नाशक गुण भी पाये जाते हैं। यह जोड़ों में दर्द तथा कोलस्ट्रोल को कम करने में सहायक है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

सोमवार, 11-04-2022 अंक-98
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

किसान लहसुन की करें समय से खुदाई, गुणवत्ता रहेगी बरकरार : डॉ. शुक्ला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने आज लहसुन उत्पादक किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने कहा कि लहसुन हमारे देश व प्रदेश की महत्वपूर्ण शल्क कंदी (बल्ब) फसल है। देश में लहसुन के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है जबकि दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश है। लहसुन का प्रयोग सब्जी, मसाला तथा अचार बनाने में किया जाता है।

उन्होंने कहा कि लहसुन की बुवाई अक्टूबर में कर किसान अप्रैल के महीने में इसकी खुदाई करते हैं। अप्रैल के महीने में जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे और कंद के पास गर्दन से नरम होकर झुकने लगे व कंद के रंगों में चमक आ जाए तब इसे खुदाई योग्य समझना चाहिए। उन्होंने अपील की है कि किसान लहसुन की खुदाई अपरिपक्व अवस्था में कदापि न करें अन्यथा लहसुन के कंद की गुणवत्ता व भंडारण क्षमता कम हो जाती है।जिससे किसान भाइयों की आय में विपरीत असर पड़ सकता है। उन्होंने लहसुन की गुणवत्ता व भंडारण क्षमता बनाए रखने के लिए कहा कि लहसुन खुदाई से 20- 25 दिन पहले 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोक्साइड दवा का छिड़काव कर देने से लगभग 300 दिन तक लहसुन को प्रतिकूल असर से बचाया जा सकता है। लहसुन की खुदाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई देना बंद कर देना चाहिए जिससे गुणवत्ता क्षमता में वृद्धि हो जाती है। खुदाई के बाद लहसुन के डंठल को बल्ब से 2-3 सेंटीमीटर गर्दन छोड़कर कटाई करें और बल्ब से मिट्टी को अच्छी प्रकार से साफ कर छायादार स्थान में 4-5 दिन तक रखना चाहिए। इसके बाद कटे-फटे बल्ब को अलग कर देना चाहिए। समान रंग-आकार के बल्ब को हवादार कमरे में लटका कर रखें या भंडारण के लिए हवादार प्लास्टिक के कैरेट्स में रखकर हवादार कमरों में रखना चाहिए। इस तरह लहसुन में भंडारण क्षमता बढ़ जाती है।

कोलेस्ट्रोल कम करना है

साकभाजी अनुसंधान केंद्र के प्रभारी डॉ. पीके सिंह ने कहा कि लहसुन में औषधि गुण होते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फास्फोरस के साथ विटामिंस भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। लहसुन का तीखापन डाईएलील डाईसल्फाइड के कारण होता है। लहसुन का प्रयोग आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति में औषधि के विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जाता है। यह जोड़ों में दर्द तथा कोलेस्ट्रोल को कम करता है। इसके अलावा भी इसके फायदें हैं।

अमर उजाला 12/04/2022

लहसुन किसान ध्यान दें

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित सब्जी विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने सोमवार को लहसुन उत्पादक किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि अप्रैल के महीने में जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे और कंद के रंग में चमक आ जाए, तब इसे खोदाई योग्य समझना चाहिए। लहसुन की खोदाई अपरिपक्व अवस्था में न करें। खोदाई से 20-25 दिन पहले 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोक्साइड दवा का छिड़काव कर देने से 300 दिन तक लहसुन को प्रतिकूल असर से बचाया जा सकता है। (संवाद)

Sign in to edit and save changes to this file.

लहसुन फसल की करें समय से खुदाई, गुणवत्ता रहेगी बरकरार

कानपुर, 11 अप्रैल। सीएसए के कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुक्ला ने आज लहसुन उत्पादक किसान भाइयों को एडवाइजरी जारी की है। वैज्ञानिक ने कहाकि लहसुन हमारे देश एवं प्रदेश की महत्वपूर्ण शल्क कंदी (बल्ब) फसल है। देश में लहसुन के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है जबकि दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश है। लहसुन का प्रयोग सब्जी, मसाला तथा अचार बनाने में किया जाता है ।डॉ शुक्ला ने कहा कि लहसुन की बुवाई अक्टूबर में करके किसान भाई अप्रैल के महीने में इसकी खुदाई करते हैं।अप्रैल के महीने में जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे तथा कंद के पास गर्दन से नरम होकर झुकने लगे एवं कंद के रंगों में चमक आ जाए। तब इसे खुदाई योग्य समझना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की है कि वे लहसुन की खुदाई अपरिपक्व अवस्था में कदापि न करें अन्यथा लहसुन के कंद की गुणवत्ता व भंडारण क्षमता कम हो जाती है।जिससे किसान भाइयों की आय में विपरीत असर पड़ सकता है। उन्होंने किसान भाइयों से लहसुन की गुणवत्ता एवं भंडारण क्षमता बनाए रखने के लिए कहा कि लहसुन खुदाई से 20 - 25 दिन पहले 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोक्साइड दवा का छिड़काव कर देने से लगभग 300 दिन तक लहसुन को प्रतिकूल असर से बचाया जा सकता है लहसुन की खुदाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई देना बंद कर देना चाहिए जिससे गुणवत्ता क्षमता में वृद्धि हो जाती है। तथा खुदाई के उपरांत लहसुन के डंठल को बल्ब से 2 - 3 सेंटीमीटर गर्दन छोड़कर कटाई करें व बल्ब से मिट्टी इत्यादि को अच्छी प्रकार से साफ करके छायादार स्थान में 4 - 5 दिन तक रखना चाहिए। इसके बाद कटे-फटे बल्ब को अलग कर देना चाहिए समान रंग आकार के बल्ब को हवादार कमरे में लटका कर रखें या भंडारण के लिए हवादार प्लास्टिक के कैरेट्स में रखकर हवादार कमरों में रखना चाहिए। इस तरह लहसुन में भंडारण क्षमता बढ़ जाती है। साक भाजी अनुसंधान केंद्र के प्रभारी डॉ.पी.के. सिंह ने कहा कि लहसुन में औषधि गुण होते हैं इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फास्फोरस के साथ विटामिंस भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। लहसुन का तीखापन डाईएलील डाईसल्फाइड के कारण होता है डॉ. सिंह ने कहा कि औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन का प्रयोग आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति में औषधि के विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जाता है।यह बातहर तथा भोजन के पाचन में गैसहर के रूप में भी प्रयोग किया जाता है । लहसुन में कीटनाशक, कवक नाशक गुण भी पाए जाते हैं। यह जोड़ों में दर्द तथा कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।

खुदाई के बाद ट्रॉली पर लहसुन की फसल की लदते किसान।

■ सीएसए के वैज्ञानिकों ने किसानों को दी जानकारियां

News Expert
9h ·

लहसुन फसल की करें समय से खुदाई, गुणवत्ता रहेगी बरकरार:- डॉक्टर आई एन शुक्ला
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित साकभाजी अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. आई. एन.शुक्ला ने आज दिनांक 11 अप्रैल 2022 को लहसुन उत्पादक किसान भाइयों को एडवाइजरी जारी कर कहा है कि लहसुन हमारे देश एवं प्रदेश की महत्वपूर्ण शल्क कंदी (बल्ब) फसल है। देश में लहसुन के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है जबकि दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश है। लहसुन का प्रयोग सब्जी, मसाला तथा अचार बनाने में किया जाता है डॉक्टर शुक्ला ने कहा कि लहसुन की बुवाई अक्टूबर में करके किसान भाई अप्रैल के महीने में इसकी खुदाई करते हैं।अप्रैल के महीने में जब लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे तथा कंद के पास गर्दन से नरम होकर झुकने लगे एवं कंद के रंगों में चमक आ जाए। तब इसे खुदाई योग्य समझना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की है कि वे लहसुन की खुदाई अपरिपक्व अवस्था में कदापि न करें अन्यथा लहसुन के कंद की गुणवत्ता व भंडारण क्षमता कम हो जाती है।जिससे किसान भाइयों की आय में विपरीत असर पड़ सकता है।डॉक्टर आई. एन. शुक्ला ने किसान भाइयों से लहसुन की गुणवत्ता एवं भंडारण क्षमता बनाए रखने के लिए कहा कि लहसुन खुदाई से 20 - 25 दिन पहले 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोक्साइड दवा का छिड़काव कर देने से लगभग 300 दिन तक लहसुन को प्रतिकूल असर से बचाया जा सकता है लहसुन की खुदाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई देना बंद कर देना चाहिए जिससे गुणवत्ता क्षमता में वृद्धि हो जाती है। तथा खुदाई के उपरांत लहसुन के डंठल को बल्ब से 2 - 3 सेंटीमीटर गर्दन छोड़कर कटाई करें व बल्ब से मिट्टी इत्यादि को अच्छी प्रकार से साफ करके छायादार स्थान में 4 - 5 दिन तक रखना चाहिए। इसके बाद कटे-फटे बल्ब को अलग कर देना चाहिए समान रंग आकार के बल्ब को हवादार कमरे में लटका कर रखें या भंडारण के लिए हवादार प्लास्टिक के कैरेट्स में रखकर हवादार कमरों में रखना चाहिए। इस तरह लहसुन में भंडारण क्षमता बढ़ जाती है। साक भाजी अनुसंधान केंद्र के प्रभारी डॉ.पी.के. सिंह ने कहा कि लहसुन में औषधि गुण होते हैं इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फास्फोरस के साथ विटामिंस भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। लहसुन का तीखापन डाईएलील डाईसल्फाइड के कारण होता है डॉ. सिंह ने कहा कि औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन का प्रयोग आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति में औषधि के विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जाता है।यह बातहर तथा भोजन के पाचन में गैसहर के रूप में भी प्रयोग किया जाता है । लहसुन में कीटनाशक, कवक नाशक गुण भी पाए जाते हैं। यह जोड़ों में दर्द तथा कोलेस्ट्रोल को कम करता है। (डॉक्टर खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर।